उत्तर

HINDI A

Class 10 - हिंदी ए

खंड क - अपठित बोध

1. 1. i. कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   2. ii. कथन I, II और III सही हैं।
   3. i. I (1), II (2), III (3)
   4. संगठित किसान आंदोलन सदस्यता के आधार पर बनी किसान सभा और किसानों की पंचायत द्वारा किए गए जिनका कार्यालय नियमित रूप से काम करता है।
   5. पूर्ववर्ती किसान आंदोलन असंगठित होने के कारण असफल हो गए। जो आंदोलन (या विद्रोह) असंगठित किसानों द्वारा किए गए वे तत्काल दबा दिए गए।
2. i. (ग) बचपन में बड़े-बड़े मोती के समान आँसू जयमाला पहनाते हैं।
   ii. (ख) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   iii. (क) कथन I और III सही हैं।
   iv. बचपन जीवन का सबसे मस्ती और चिंता रहित समय होता है। यह निर्भय, शांति,स्वच्छंद और अतुलित आनंद प्रदान करने वाला समय होता है।
   v. रोती हुई कवयित्री को देख माँ अपना सारा काम छोड़कर तुरन्त आती है और उसे गोद में उठाकर चूमती है तथा बहला - फुसलाकर,लाड- प्यार कर शांत कराती है।

खंड ख - व्यावहारिक व्याकरण

3. i. एक साल पहले कॉलेज बना और उसमें शीला अग्रवाल की नियुक्ति हुई थी।
   ii. साहसी व्यक्ति के लिए कोई कार्य असम्भव नहीं है।
   iii. जब सवार का संतुलन बिगड़ा, तब वह गिर गया।
   iv. आश्रित उपवाक्य - कि बिना पाँव धोए आपको नाव पर नहीं चढ़ाऊँगा।
   आश्रित उपवाक्य का भेद - संज्ञा उपवाक्य।
   v. जब हमने स्वयं किया तब पसीने छूट गए। (मिश्रित वाक्य)
4. i. छात्रों के द्वारा विद्यालय में पौधे लगाए गए।
   ii. चलो, घूमने चला जाए।
   iii. शाहजहां ने ताजमहल बनवाया।
   iv. प्राचार्य द्वारा छात्रों को पुरस्कार दिए गए।
   v. मुझसे/मेरे द्वारा इस धुप में नहीं चला जाता/जा सकता।
5. i. **जहाँ तक-** स्थानवाचक क्रियाविशेषण, 'हो चुका है' क्रिया का विशेषण।
   ii. **कुछ-** परिमाणवाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'जमीन' की विशेषता।
   अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, विशेष्य- ' जमीन'|
   iii. **हमें-** पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग / स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्मकारक।
   पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, बहुवचन, पुल्लिंग/ स्त्रीलिंग ,कर्म कारक।
   iv. **भावना** - भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, संबंध कारक।
   v. **रुक जाएगी**- अकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, भविष्य काल, कर्तृवाच्य
6. i. उत्प्रेक्षा अलंकार
   ii. मानवीकरण अलंकार
   iii. अतिशयोक्ति अलंकार
   iv. उपमा अलंकार
   v. रूपक अलंकार

खंड ग - गद्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

7. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

बालगोबिन भगत की संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया, जिस दिन उनका बेटा मरा। इकलौता बेटा था वह ! कुछ सुस्त और बोदा-सा था, किन्तु इसी कारण बालगोबिन भगत उसे और भी मानते। उनकी समझ में ऐसे आदमियों पर ही ज्यादा नजर रखनी चाहिए या प्यार करना चाहिए, क्योंकि ये निगरानी और मुहब्बत के ज्यादा हकदार होते हैं। बड़ी साध से उसकी शादी कराई थी, पतोहू बड़ी ही सुभग और सुशील मिली थी। घर की पूरी प्रबंधिका बनकर भगत को बहुत कुछ दुनियादारी से निवृत्त कर दिया था उसने। उनका बेटा बीमार है, इसकी खबर रखने की लोगों को कहाँ फुरसत ! किन्तु मौत तो अपनी ओर सबका ध्यान खींचकर ही रहती है।

(i) **(ख)** शारीरिक रूप से अक्षम
व्याख्या:

SATISH SCIENCE ACADEMY

शारीरिक रूप से अक्षम

(ii) **(घ)** मृत्यु ध्यान आकर्षित करती है
व्याख्या:
मृत्यु ध्यान आकर्षित करती है

(iii) **(ग)** पुत्र की मृत्यु के दिन
व्याख्या:
पुत्र की मृत्यु के दिन

(iv) **(घ)** बालगोबिन भगत की बहु
व्याख्या:
बालगोबिन भगत की बहु

(v) **(ग)** सुस्त और बोदा
व्याख्या:
सुस्त और बोदा

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:

(i) हालदार साहब चौराहे पर दो मुख्य कारणों से रुकते थे:

i. **स्थानीय गतिविधियों की निगरानी**: चौराहा कस्बे का केंद्र होने के कारण, यहाँ हर प्रकार की गतिविधियाँ होती थीं। हालदार साहब वहाँ रुककर लोगों के हालचाल और कस्बे की गतिविधियों पर नजर रखते थे।

ii. **सामाजिक मेल-जोल**: चौराहे पर रुकने से उन्हें स्थानीय लोगों से मिलना-जुलना और बातचीत करने का अवसर मिलता था। यह उनके लिए सामाजिक संपर्क का एक महत्वपूर्ण माध्यम था, जिससे वे अपने समुदाय से जुड़े रहते थे।

(ii) "एक कहानी यह भी" पाठ में पड़ोस कल्चर का उल्लेख समाज में आपसी संबंधों, सहयोग, और समझ का प्रतीक है। इस कल्चर का अर्थ है कि पड़ोसी एक-दूसरे के साथ मिलकर रहते हैं, उनकी मदद करते हैं और सामाजिक जुड़ाव बनाए रखते हैं।
पड़ोस कल्चर में उत्सव, दुख-सुख, और दैनिक जीवन की गतिविधियों में सहभागिता शामिल होती है। यह एक ऐसा वातावरण तैयार करता है जहाँ लोग एक-दूसरे के प्रति जिम्मेदार और संवेदनशील होते हैं। इस प्रकार का कल्चर न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामूहिक विकास में भी सहायक होता है, क्योंकि इससे समुदाय में एकता और भाईचारे की भावना मजबूत होती है।

(iii) नवाब साहब द्वारा किया गया सहसा अभिवादन लेखक को इसलिए अच्छा नहीं लगा होगा क्योंकि जब वे डिब्बे में चढ़े थे नवाब साहब उनसे बात करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं थे और उनसे नज़रें चुरा रहे थे। ऐसे में उनका अभिवादन करना यह दर्शाता है कि वे स्वयं को सभ्य दिखाने का दिखावा कर रहे हैं।

(iv) लेखक उस संस्कृति को संस्कृति नहीं मानता है जो पुरानी अतार्किक रूढ़ियों को आज भी ढोए जा ही है और वर्ण-व्यवस्था के नाम पर समाज में भेदभाव बनाए हुए है। इसका कारण यह है कि ऐसी संस्कृति मानव का कत्याण करने की जगह अकल्याण करती है। ऐसी संस्कृति समाज के लिए उपयोगी नहीं होती है।

खंड ग - काव्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

मधुप गुन-गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।
इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास
यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य-मलिन उपहास
तब भी कहते हो कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे यह गागर रीती।
किंतु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले-
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले।

(i) **(ख)** दु:खद पक्ष का
व्याख्या:
जीवन के दु:खद पक्ष का

(ii) **(क)** ढलती उम्र एवं जीवन के आनंद की समाप्ति की ओर
व्याख्या:
ढलती उम्र एवं जीवन के आनंद की समाप्ति की ओर

(iii) **(ग)** मन रूपी भौरे को
व्याख्या:
मन रूपी भौरे को

(iv) **(ग)** अपने रिक्त जीवन को
व्याख्या:

SATISH SCIENCE ACADEMY

अपने रिक्त जीवन को

(v) **(घ)** छायावादी युग

व्याख्या:

छायावादी युग की रचना है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:

(i) **उड़ने को नभ में तुम पर-पर कर देते हो** से कवि का आशय है कि फागुन के महीने में प्रकृति की सुंदरता में ऐसा निखार आ जाता है कि मन प्रसन्नता से भर उठता है। वह उल्लास में भरकर कल्पना रूपी आकाश में उड़ने लग जाता है। इस प्रकार फागुन प्राकृतिक सौंदर्य का सृजन कर आनंद लोक में विचरण करने का माध्यम उपलब्ध करा देता है।

(ii) कृषक का जीवन कृषि पर आधारित है। किसान अपने परिश्रम के द्वारा फसलों की बुवाई, सिंचाई, निराई, कटाई, रखवाली तथा और भी रूपों से देखभाल करता है। किसानों के परिश्रम के बिना पानी, मिट्टी, सूरज की किरणें तथा हवा जैसे तत्व व्यर्थ हैं। वह दिन-रात, समय-असमय, दु:ख की चिंता न करते हुए अपने परिश्रम से बीज बोने से लेकर फसल तैयार होने तक का धैर्य रखता है अत: उसके धैर्य और अथक परिश्रम की पराकाष्ठा को देखकर कृषक को अधिक महत्व दिया गया है।

(iii) संगतकार की आवाज को कमजोर काँपती आवाज कहा गया है क्योंकि जब मुख्य गायक गीत गाता है तो उसके साथ चट्टान के समान कठोर भारी ध्वनि के साथ काँपती हुई आवाज सहायक गायक की होती है। और ऐसा लगता है जैसे वह मुख्य गायक का छोटा भाई हो जो हर कार्यक्षेत्र में बड़े भाई का साथ देता है वैसे ही सहायक गायक मुख्य गायक के स्वर का साथ देकर उसके गायन की कमियों को ढक देता है। वह एक शिष्य की तरह आज्ञाकारी होता है। जब मुख्य गायक को सहायक गायक की आवश्यकता पड़ती है तो संगतकार अपना कर्त्तव्य निभाता है। इसे देखकर ऐसा लगता है जैसे मुख्य गायक की ऊँची आवाज पर उसका साथ देने के लिए दूर से पैदल चलकर उसका कोई रिश्तेदार आया है। वह पुराने समय से मुख्य गायक की आवाज के साथ अपनी कोमल आवाज से उसका साथ देता आ रहा है।

(iv) सूरदास के पदों में श्रृंगार और वात्सल्य रस की प्रधानता है। परन्तु इन पदों में गोपियों का विरह का वर्णन है इसलिए इनमें वियोग श्रृंगार रस की प्रधानता है। सूरदास के काव्य में गेयता का गुण विद्यमान है। सूरदास को श्रृंगार और वात्सल्य का सम्राट कहा जाता है । इनमें कृष्ण, उद्धव, गोपियाँ तथा माता यशोदा आदि प्रमुख पात्र हैं।

खंड ग - कृतिका (पूरक पाठ्यपुस्तक)

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए:

(i) पाठ में ऐसे कई प्रसंग आए हैं जिन्होंने मेरे दिल को छू लिया, उन्हीं में से दो प्रसंग निम्नलिखित हैं-

i. बच्चे का अपने पिता के साथ कुश्ती लड़ना। शिथिल होकर बच्चे के बल को बढ़ावा देना और पछाड़ खा कर गिर जाना। बच्चे का अपने पिता की मूंछ खींचना और पिता का इसमें प्रसन्न होना बड़ा ही आनन्दमयी प्रसंग है।

ii. बच्चों द्वारा बारात का स्वांग रचते हुए समधी का बकरे पर सवार होना। दुल्हन को लिवा लाना व पिता द्वारा दुल्हन का घूँघट उठाने ने पर सब बच्चों का भाग जाना, बच्चों के खेल में समाज के प्रति उनका रुझान झलकता है तो दूसरी और उनकी नाटकीयता, स्वांग उनका बचपना।

(ii) 'मैं क्यों लिखता हूँ?' पाठ में अज्ञेय जी अपनी आंतरिक विवशता को प्रकट करने के लिए लिखते हैं। वे तटस्थ होकर यह देखना चाहते हैं कि उनका मन क्या सोचता है। वे लिखकर मन की बैचैनी और उसकी छटपटाहट से मुक्ति पाने के लिए लिखते हैं। वे स्वयं को जानने और समझने व पहचानने के लिए लिखते हैं। वे यह भी मानते हैं कि कई बार कुछ लेखक आर्थिक कारणों से भी लिखते हैं या कुछ संपादक के दबाव और प्रसिद्धि की कामना के लिए भी लिखते हैं।

(iii) सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में निम्न लोगों का योगदान रहता हैं-

i. पर्यटन विभाग के कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।
ii. सैलानियो को कुशल गाइड की आवश्यकता होती है।
iii. पर्यटन स्थल के स्थानीय निवासियों का योगदान रहता है।
iv. उस स्थान के झरने, पेड़, फूल एवं वन्य जीवों का भी योगदान रहता है।
v. वे सहयोगी यात्री जो यात्रा में मस्ती भरा महौल बनाए रखते हैं और कभी निराश नहीं होते हैं। उत्साह से भरपूर होते हैं।
vi. उस स्थान की इमारतें, बाजार, मेले और स्थानीय परंपराएं भी यात्रियों को आकर्षित करती है|

खंड घ - रचनात्मक लेखन

12. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिये:

(i) **पॉलीथिन थैलियों पर अनिवार्य प्रतिबंध**

आज प्लास्टिक बैग का उपयोग हम सभी के लिए बहुत जरूरी है और इसका प्रयोग बहुत से उद्देश्यों के लिए किया जाता है। सबसे ज्यादा पॉलीथिन का प्रयोग किराने की दुकान पर फल और सब्जियों की दुकान पर किया जाता है। मार्केट में सभी प्रकार की पॉलीथिन आसानी से मिल जाती है। आज मार्केट में उपलब्ध यह प्लास्टिक बैग बहुत बड़ी समस्या का विषय भी बना हुआ है, क्योंकि पॉलीथिन की वजह से भूमि, वायु और जल प्रदुषण हो रहा है। पॉलीथिन हमारे पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँचा रही है। पर्यावरण को इसके हानिकारक प्रभाव से बचने के लिए पॉलीथिन पर प्रतिबंध लगाया जाना आवश्यक है।

पॉलीथिन के बढ़ते प्रदुषण को रोकने के लिए हमारी सरकार ने प्लास्टिक की थैलियों पर प्रतिबंध भी लगा दिया है। हालाँकि अभी इस योजना को पूरे देश में लागू नहीं किया गया है, लेकिन फिर भी सभी लोगों को समझना चाहिए कि यह जो प्रतिबंध लगाया गया है, वो हम सभी देशवासियों की भलाई के लिए लगाया गया है। पर्यावरण को स्वच्छ रखना हमारी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। उसके लिए हम को पॉलीथिन के प्रयोग को रोकना बहुत जरूरी है। इसके ज्यादा प्रयोग से हमारे पर्यावरण को बहुत नुकसान हो रहा है। इससे भूमि प्रदुषण, वायु प्रदुषण होता है। प्लास्टिक की थैलियाँ प्रयोग में लेने के बाद में जब आप फेंक देते हैं तो वह ना तो जलती है, ना गलती है बल्कि लंबे समय तक भूमि पर पड़े रहने के बाद वह

SATISH SCIENCE ACADEMY

हमारी भूमि को भी अनुर्वर बना देती है।

हमारी सरकार ने पॉलीथिन पर कानूनी रूप से प्रतिबंध तो लगा दिया, लेकिन अभी भी व्यावहारिक रूप से इसका प्रयोग बंद नहीं हुआ है। इसलिए हम सभी को मिलकर इसको रोकने के उपाय करने होंगे। सबसे पहले हमें सामान खरीदने के लिए पॉलीथिन की जगह कपड़े के थैले और जूट के थैले का इस्तेमाल करना चाहिए। सबसे पहले हमें उन दुकानदारों पर प्रतिबंध लगाना चाहिए, जो अभी भी प्लास्टिक की थैलियों का व्यवसाय कर रहे हैं। उन दुकानदारों पर भारी जुर्माना लगाकर उनको बंद करना होगा।

हमारे देश में लोगों को समझना चाहिए कि प्लास्टिक की पॉलीथिन हमें कितनी हानि पहुँचाती हैं और अप्रत्यक्ष रूप से हमारे जीवन को नष्ट कर रही है। सरकार ने तो इस पर पूरी तरीके से पाबंदी लगा दी है बस अब हमें ही जागरूक होकर इसका पालन करना है और अपने देश को स्वच्छ और सुंदर बनाना है।

(ii) आज के युग को विज्ञापनों का युग कहा जा सकता है। आज सभी जगह विज्ञापन-ही-विज्ञापन नज़र आते हैं। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ एवं उत्पादक अपने उत्पाद एवं सेवा से संबंधित लुभावने विज्ञापन देकर उसे लोकप्रिय बनाने का हर संभव प्रयास करते हैं। किसी नए उत्पाद के विषय में जानकारी देने, उसकी विशेषता एवं प्राप्ति स्थान आदि बताने के लिए विज्ञापन की आवश्यकता पड़ती है। विज्ञापनों के द्वारा किसी भी सूचना तथा उत्पाद की जानकारी, पूर्व में प्रचलित किसी उत्पाद में आने वाले बदलाव आदि की जानकारी सामान्य जनता को दी जा सकती है।

विज्ञापन का उद्देश्य जनता को किसी भी उत्पाद एवं सेवा की सही सूचना देना है, लेकिन आज विज्ञापनों में अपने उत्पाद को सर्वोत्तम तथा दूसरों के उत्पादों को निकृष्ट कोटि को बताया जाता है। आजकल के विज्ञापन भ्रामक होते हैं तथा मनुष्य को अनावश्यक खरीदारी करने के लिए प्रेरित करते हैं। अतः विज्ञापनों का यह दायित्व बनता है कि वे ग्राहकों को लुभावने दृश्य दिखाकर गुमराह नहीं करें, बल्कि अपने उत्पाद के सही गुणों से परिचित कराएँ। तभी उचित सामान ग्राहकों तक पहुँचेगा और विज्ञापन अपने लक्ष्य में सफल होगा।

(iii) देश की उचित सामाजिक और आर्थिक वृद्धि के लिए स्त्री शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। पुरुष और महिला दोनों सिक्के के दो पहलू की तरह हैं और समाज के दो पहियों की तरह समान रूप से चलते हैं। इसलिए दोनों देश में विकास और विकास के महत्वपूर्ण तत्व हैं और इस प्रकार शिक्षा में समान अवसर की आवश्यकता है। यदि दोनों में से कोई भी नकारात्मक पक्ष लेता है, तो सामाजिक प्रगति संभव नहीं है। महिलाएँ हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ मिलकर काम कर रही हैं। यह सर्फ स्त्री शिक्षा के कारण हो रहा है। भारत को विकासशील से विकसित भारत बनाने के लिए यह महत्वपूर्ण है। आज प्रत्येक क्षेत्र में उच्च पद पर कार्यरत महिलाओं को देख सकते हैं। अब, महिलाएँ न केवल घर की देखभाल के लिए होती हैं, बल्कि वह पढ़ लिख कर अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर लेती है। शिक्षा पुरुषों और महिलाओं की बुनियादी ज़रूरतों में से एक है। इतिहास में भारत के पिछले वर्षों में, महिलाओं की तुलना में पुरुषों में साक्षरता दर अधिक थी। ब्रिटिश राज से भारत की स्वतंत्रता के समय में, साक्षर महिलाओं का प्रतिशत कुल महिला जनसंख्या का केवल 2-6% था। भारत गणराज्य की स्थापना के बाद, सरकार महिलाओं की शिक्षा को बहुत महत्व दी है। भारत में महिला शिक्षा देश के भविष्य के लिए अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि महिलाएँ अपने बच्चों की पहली शिक्षिका का अर्थ है राष्ट्र का भविष्य। यदि महिलाओं की शिक्षा को अनदेखा किया जा रहा है, तो यह राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य से अनभिज्ञ होगा। एक अशिक्षित महिला सक्रिय रूप से परिवार को संभालने, बच्चों की उचित देखभाल और इस तरह कमजोर भविष्य की पीढ़ी में भाग नहीं ले सकती है। हम महिला शिक्षा के सभी फायदों को नहीं गिना सकते। एक शिक्षित महिला अपने परिवार को आसानी से संभाल सकती है, प्रत्येक परिवार के सदस्य को जिम्मेदार बना सकती है, बच्चों में अच्छे गुणों का संचार कर सकती है, सामाजिक कार्यों में भाग ले सकती है और सभी उसे सामाजिक और आर्थिक रूप से स्वस्थ राष्ट्र की ओर ले जाएँगे।

13. प्रिय शिक्षा निदेशक जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय की रंग-मंडली द्वारा प्रस्तुत नाटक की उत्कृष्टता को देखते हुए, कृपया आप इसे देखने का कष्ट करें। यह नाटक हमारे छात्रों की प्रतिभा और मेहनत का परिणाम है और इसका मंचन बहुत प्रभावशाली रहा। नाटक के बाद, श्रेष्ठ अभिनेताओं को पुरस्कृत करने का विचार हमारे विद्यार्थियों की प्रेरणा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। आपकी उपस्थिति और प्रोत्साहन से न केवल उनकी मेहनत की सराहना होगी, बल्कि अन्य छात्रों को भी प्रेरणा मिलेगी। कृपया इस अवसर को साकार करने में हमारी सहायता करें।

सधन्यवाद,
तुषार सिंह
सांस्कृतिक सचिव
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय नं. 2,
पालम कॉलोनी, दिल्ली -110045

अथवा

दिनांक: 15 अप्रैल, 2022
15/758 गोविंदपुरी,
दिल्ली।
प्रिय गिरीश,
खुश रहो।

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ और आशा करता हूँ कि तुम भी स्वस्थ होंगे। आजकल इंटरनेट का उपयोग अधिक मात्रा में किया जा रहा है। इंटरनेट के बढ़ते प्रयोग के साथ-साथ ऑनलाइन धोखाधड़ी एवं साइबर अपराधों में भी वृद्धि हुई है। इसके उपयोग के प्रति लोगों में जानकारी का यथाव है जिससे के जल्दी ही ठगी की शिकार हो जाते हैं। अतः मैं तुम्हें इन सब बातों से सचेत करना चाहता हूँ। साइबर अपराधी लोगों को तरह-तरह की तरकीबों से लूटने में लगे है। ग्राहकों को तरह-तरह के ऑफर्स का लालच देकर उनके बैंक एकाउंट को खाली कर देते है, क्योंकि इसके सर्वर विदेश में हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर साइबर अपराध के हैंकर्स ऑनलाइन ठगी का शिकार बनाते हैं। भारत सरकार ने इस ठगी की शिकायत करने के लिए हेल्पलाइन नं. 1930 जारी किया है। इसलिए तुम इन सभी बातों से सावधान रहते हुए ही इंटरनेट का उपयोग करना। आशा करता हूँ तुम मेरी बातों को याद रखोगें। माता-पिता को प्रणाम एवं बहन को बहुत सारा प्यार।

SATISH SCIENCE ACADEMY

तुम्हारा बड़ा भाई,
गोविंद
गोविंद नगर,
हरियाणा।

14. प्रति,
व्यवस्थापक
बंसल प्रकाशन प्रा० लि०
दिल्ली।

विषय-डी. टी. पी. आपरेटर हेतु आवेदन-पत्र।

महोदय,

दिनांक 05 मई, 20xx को प्रकाशित 'टाइम्स ऑफ इंडिया' अंग्रेजी दैनिक समाचार-पत्र से ज्ञात हुआ कि आपके प्रकाशन को डी. टी. पी. आपरेटर की आवश्यकता है। मुझे डी .टी .पी . आपरेटर के कार्य का अनुभव और जानकारी है। इस संबंध में मैं अपनी योग्यताओं का उल्लेख करते हुए आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरा संक्षिप्त व्यक्तिगत विवरण निम्नलिखित है-

नाम - रोहित राय
पिता का नाम - श्री राम प्रकाश राय
जन्मतिथि - 10 सितबर, 1990
पता - बी 323, इंद्रप्रस्थ कालोनी, आनंद विहार, दिल्ली।
शैक्षणिक योग्यताएँ-

दसवीं कक्षा	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2005	55%
बारहवीं कक्षा	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2007	59%
बी. ए.	पत्राचार संस्थान, दिल्ली	2010	55%

व्यावसायिक योग्यताएँ-

1. पुस्तक प्रकाशन में द्विवर्षीय डिप्लोमा वाई.एम.सी.ए. से 2012
2. कम्प्यूटर प्रशिक्षण एकवर्षीय डिप्लोमा एन.आई.आई.टी से 2013

अनुभव- ओजस्वी प्रकाशन में कम्प्यूटर आपरेटर मार्च 2013 से अब तक।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि सेवा का अवसर मिलने पर पूरी निष्ठा से कार्य करूँगा और अपनी सेवाओं से मैं आपको संतुष्ट रखने का पूर्ण प्रयास करूँगा।

सधन्यवाद
रोहित राय
हस्ताक्षर .....
दिनांक 08 मई, 2019

संग्लन- समस्त शैक्षणिक, व्यावसायिक योग्यताओं एवं अनुभव प्रमाण-पत्रों की छायांकित प्रति।

अथवा

From: pawan@mycbseguide.com
To: mtnlcsco@gmail.com
CC ...
BCC ...

विषय - खराब टेलीफोन के संबंध में

महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने टेलीफोन की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। इसका नंबर 011982545XX है। यह फोन पिछले पंद्रह दिनों से खराब पड़ा है। इसकी शिकायत स्थानीय कार्यालय में कर चुका हूँ। वहाँ के अधिकारी एक तो ढंग से बात नहीं करते हैं और न कोई कार्य करते हैं। कभी कोई सुनता भी है तो आश्वासन देकर टाल देते हैं। अतः आपसे प्रार्थना है कि आप कर्मचारियों को टेलीफोन ठीक करने का आदेश देने की कृपा करें। आपकी इस कृपा के लिए मैं आभारी रहूँगा।

पवन

किराए पर दुकान हेतु

एक 16 × 18 गज की पूर्व मुखी दो मंजिला दुकान मुख्य बाजार साध नगर में, प्राइम लोकेशन व पार्किंग सुविधा के साथ किराए पर उपलब्ध है। उचित दाम में।

SATISH SCIENCE ACADEMY

15.

इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें।
सुशिल शर्मा, मो. नं. 9258XXXX

अथवा

संदेश

13 अक्तूबर, 20xx
प्रातः- 10.00 बजे
प्रिय गोविन्द
आज सुबह टेलीविजन में तुम्हें देखा। तुम्हारी उपलब्थी के विषय में पता चला। शतरंज में तुम्हें स्वर्ण पदक मिला और राप्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी के रूप में तुम्हारा चयन हो गया है। तुम्हारी मेहनत ने तुम्हें आज अत्यंत ऊँचा दर्जा दिलवाया है। आगे भविष्य में भी तुम इसीप्रकार तरक्की करते रहोगे। मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ और बधाई।
गिरीश कुमार

SATISH SCIENCE ACADEMY